३७ **वसतीवरी**- यज्ञ के कार्य के लिए उपयोग में आने वाले आवश्यक जल को वसतीवरी कहते हैं। यह जल विधिपूर्वक नदी से घड़ों में लाया जाता है। इसी जल से सोमाभिषवादि कार्य होते हैं। ''वसतीवरीर्निनयन्ति । दे.या.प.- पृष्ठ 308

३७ वसतीवरी

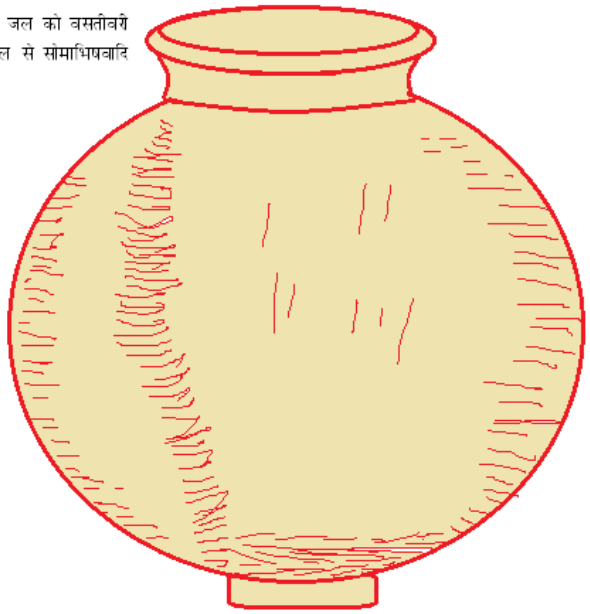

३८ धमनी

३८ **धमनी**- वंश निर्मित जिस पात्र के द्वारा मुँह से हवा फेंकते हुए अग्नि प्रज्ज्वलित करते हैं, उस पात्र विशेष को धमनी कहते हैं। ''न पक्षपेनोपधमेत्। यज्ञपार्श्व श्लोक-66.67

३९ महावीरपात्र

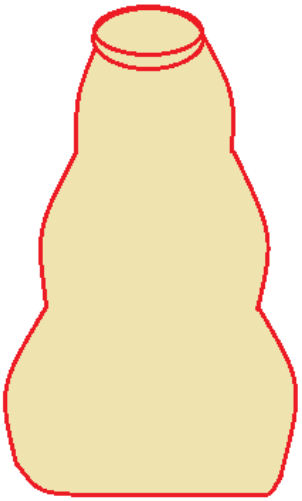

३९ **महावीरपात्र**- अग्निष्टोम प्रभृति यागों में प्रवर्ग्य को यज्ञ का शिरस्थानीय कहा गया है। प्रवर्ग्य और घर्म महावीर का पर्याय है। महावीरसंज्ञक एक मिट्टी का पात्र बनाया जाता है। यह कई प्रकार की मिट्टी, गवेधुका और दूध आदि से सविधि बनता है। यह पात्र प्रादेशमात्र ऊँचा, चौड़े पेंदेवाला, चौड़े मुँहवालाऔर मध्य में कृश होता है। इसमें घी धरकर खूब खौलाते हैं। अनन्तर उसे मैदान में ले जाकर, उसमें दूध छोड़ते हैं। दूध छोड़ते ही अत्यन्त धर्यकर ज्वाला निकलती है। बाद में उसे यज्ञशाला में लाकर उससे हवन करते हैं। ''महावीर परिसिंचति। का.श्रौ.सू.- 26/4/6,कुर्यात्प्रादेशमात्राणि महावीराणि0 । यज्ञपार्श्व परि.-श्लोक 18

४० चरुस्थाली

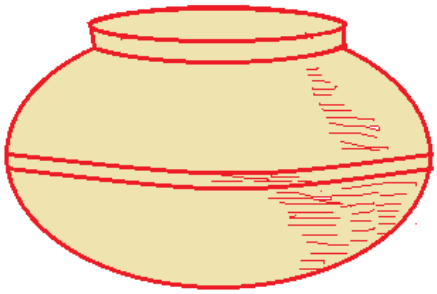

४० **चरुस्थाली**- याग के निमित्त गार्हपत्य पर पाचित ओदन चरु है। यहाँ विशेष देवता के लिए विशेष द्रव्य विहित है। इस प्रकार देवता विशेष हेतु चरु बनाकर जिस पात्र में रखा जाता है, उसे चरुपात्र कहते हैं।